ऋग्वेद

यजुर्वेद

वर्ष-१२ अंक-३

२७ अक्टूबर २०१५

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

एक प्रति- २०-०० रू.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद

अथर्ववेद

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१२ अंक-३

२७ अक्टूबर २०१५
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	5
महर्षि द्वारा रचित ग्रंथों का परिचय	7
महर्षि दयानन्द और आर्य समाज...	10
मनमीत बसा मन में	12
बुराई का प्रतीक	13
जब भगवान बुद्ध हताश हुए	15
आखिर क्यों ?	17
उदारता	20

नवम्बर माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

1	म.प्र., छग. स्थापना दिवस
10	दक्षिणी दीपावली
11	महर्षि स्वामी दयानंद निर्वाणोत्सव, दीपावली
14	विश्वामित्र जयंती, पं. जवाहर लाल नेहरू जयंती, बाल दिवस
15	गुरु गोविन्द सिंह पुण्य तिथि
17	लाला लाजपतराय बलिदान दिवस
19	झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जयंती, इंदिरा गांधी जयंती
22	कालीदास, संत नामदेव, विरांगना झलकारी बाई जयंती
	वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि
24	गुरु तेग बहादुर पुण्यतिथि
25	गुरुनानक देव जयंती
28	महात्मा जोतीराव फुले पुण्यतिथि

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप

नन्हें दीपक ने ज्यों,
अन्धकार को ललकारा है।
बढ़ती दानवता ने आज,
मानवता को नकारा है।।

निराशा संस्कृति नहीं हमारी,
विश्वास ही इतिहास हमारा है।
ऐ सोने वालो जागो,
आने वाला कल तुम्हारा है।।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को,
जीवन सन्देश बना डालो।
जितने बुझे पड़े हैं दीप,
उठकर सारे जला डालो।।

– ***प्रकाश आर्य, महू***

दीपावली के ज्योति पर्व पर परमात्मा आप सबके हृदय ज्ञान प्रकाश से आलौकित कर दे, सुख समृद्धि स्वास्थ प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है। दीपोत्सव मंगलमय हो।

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी
सभाप्रधान

प्रकाश आर्य
सभामन्त्री

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

सम्पादकीय –

प्रदर्शन से लुप्त होता दर्शन

प्रदर्शन किसी भी वस्तु, व्यक्ति, विचार का बाहरी स्वरूप है और दर्शन आन्तरिक। प्रदर्शन दृश्यमान है, दर्शन अदृश्य है, दोनों का।

किसी भी वस्तु विचार, व्यक्ति, स्थान की ऊपरी पहचान प्रदर्शन से अवश्य होती है किन्तु मात्र प्रदर्शन से उसकी पूर्णता नहीं होती है उस प्रदर्शन के पीछे छिपा दर्शन ही उसका मूल होता है। जैसे नारियल, बादाम, अखरोट का दर्शनीय रूप और है लेकिन वास्तव में उपयोगिता उसके अन्दर छिपे पदार्थ से है।

समाज आज इस मूल्यवान विचार से भटक गया है और इसीलिए उसका परिणाम जो वह सोचता है, जैसा वह चाहता है वैसा प्राप्त न होते हुए विपरीत ही रहता है। जब मनुष्य दर्शन से दूर रहता है तो वह प्रदर्शन सीमित रह जाता है यथार्थ से दूर हो जाता है। प्रायः आज हमने एक धार्मिक व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान, बुद्धि, संयम, तपस्या और दिनचर्या से, उसके आचार विचार से जो उसकी कसौटी उसका महत्व हैं उन्हें न देखते हुए मात्र उसके वस्त्र, कंठी माला तिलक दाड़ी और बेशकीमती विलासिता से युक्त जीवन बड़े आश्रमों को ही मान लिया है। मनुष्य बाहरी स्वरूप के प्रति दिल से प्रभावित होता है दिमाग से नहीं। किसी को स्वीकार करने, उसे अपनाने या उसे मान्यता देने के पहले यदि दिल और दिमाग दोनों का उपयोग किया जाए तो व्यक्ति प्रदर्शन तक ही नहीं, वह दर्शन तक पहुंच जाता है।

सोने चांदी का व्यापारी दुकान पर बैठकर जब सोना खरीदता है तो उसके हाथ में आये हुए गहने के बाहरी रूप को देखकर वह प्रभावित नहीं होता है। बाहरी रूप तो उसे सोने की चमक से भी ज्यादा प्रभावित कर सकता है। किन्तु ये बाहरी रूप उस धातु का प्रदर्शन है, भीतरी स्वरूप उसका गुण स्वर्ण है। इसलिए सोना खरीदने के पहले वह एक पत्थर जैसी धातु की कसौटी पर घिसकर, परीक्षण कर उसके मूल दर्शन तक पहुंचता है, तब वह सही वस्तु को प्राप्त करता है।

किन्तु आज समाज प्रदर्शन में ही उलझकर रह गया है। प्रदर्शन में उलझा हुआ समाज, दर्शन से दूर रहकर वास्तविक लाभ से वंचित रह रहा है और भ्रम में जी रहा है। बाहरी प्रदर्शन से ही देश, धर्म और समाज की सेवा का नाटक करने वाले अनेक बहरूपिए करोड़ों–करोड़ों जनता को गुमराह कर ठग रहे हैं। और इसी कारण गलत विचारधारा और उपरी स्वांग से सजे व्यक्तियों को मान्यता प्राप्त हो रही है। इसलिए कहा गया, पहले जानो फिर मानों।

परन्तु जमाना आज बिना सोचे समझे दूसरों की मान्यता को आधार बनाकर पहले मानता है, फिर जानने का प्रयास करता है। आचार्य चाणक्य ने भी मात्र प्रदर्शन को देखकर उसे आत्मसात करना गलत बताया और कहा मानव के पास परमात्मा ने जो बुद्धि दी है जिसका उपयोग करके वह सत्य असत्य को तर्क पर जो सही उतरे उसे मानना चाहिए – **"यस्तर्केण अनुसंधन्ते स धर्मो वेद नेतरः"**

आज समाज में बढ़ती हुई अव्यवस्था का कारण यही है कि हम जो मानते हैं वह वैसा नहीं है और कुछ ऐसा नहीं मान रहे, जैसा मानना चाहिए।

रावण के चारित्रिक पतन के कारण उसे नीचा दिखाने के लिए उसका सामुहिक रूप से पुतला दहन किया गया। इस दहन के पीछे भावना थी जिसका अपयश है, जिसकी अकीर्ति होती है, वह समाज में मरे हुए के समान होता है **"अकीर्ति सा मृत्यु"**

इसलिए लाखों साल के बाद भी उसके पुतले को बुराई का प्रतीक मानकर दहन किया जाता है। यह इस दहन के पीछे समाज को सन्देश देने का प्रतीक था। किन्तु समाज आज जो बुराई का प्रतीक था उसका पुतला बड़े से बड़ा बनाते है और मनोरंजन का एक और माध्यम उसे बना चुके हैं। इसलिए अतीत में जो दर्शन रावण दहन के पीछे था एक बुराई का अन्त करने का था, वह अब प्रदर्शन बनकर रह गया। सीता हरण भी रावण के द्वारा साधू का ऊपरी प्रदर्शन करके ही तो हुआ था। वही परिपाटी आज भी चल रही है। अनेक साधू, सन्त, विद्वान, नेता का बाहरी रूप धारण किए हुए व्यक्ति व्यक्ति अनेक प्रकार के घृणित कार्यों में उलझे हैं लेकिन भ्रमित समाज उन्हें अपना आराध्य मानकर पूज रहा है।

हमारे देश में दीपावली का त्यौहार प्राचीन पर्व है। कृषि प्रधान देश में नए अन्न की फसल आने पर खुशियॉ मनाकर उस प्रभु का धन्यवाद करने के लिए यज्ञ किया जाता था। अब केवल दीपमाला, फटाखे, मकान की सजावट तक ही इस विचार को समझ रहे हैं तथा कहीं–कहीं जुआ खेलना प्रचलन में आ गया है और दर्शन से दूर हैं। इसलिए किसी भी स्थान, व्यक्ति, विचार और वस्तु के प्रदर्शन पर ही आकर्षित होना बुद्धिमानी नहीं है, प्रदर्शन के पीछे की भावना दर्शन मुख्य है। यदि ऐसा किया जाए तो शोषण, परेशानियों व संकटों से बचा जा सकता है।

महर्षि द्वारा रचित ग्रंथों का परिचय

गोकरूणानिधि

प्रश्न 1 : ऐसा सुनने में आया है कि महर्षि ने पशुओं की, विशेषकर गौओं की, रक्षा के उद्‌देश्य से भी कोई ग्रंथ लिखा था। उसका क्या नाम है ?

उत्तर : हॉ। महर्षि ने सभी पशुओं की हिंसा रोककर उनकी रक्षा करने के उद्‌देश्य से गोकरूणानिधि नामक पुस्तक लिखी है। चूंकि गौओं के दूध और बैलों से सबसे अधिक हित होता है, अतः उन्होंने गौ की रक्षा पर अधिक बल दिया है। वैसे सभी पशुओं को सुरक्षा के लिए लिखा है।

प्रश्न 2 : पशुओं की रक्षा करके महर्षि क्या सिद्ध करना चाहते हैं ?

उत्तर : इससे मुख्य रूप से महर्षि दो प्रकार के उद्‌देश्यों की पूर्ति चाहते हैं।

1. सर्वशक्तिमान ईश्वर की तरह सब मनुष्य अपने अन्दर दया और न्याय के भाव उत्पन्न करके स्वार्थपन से कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें। उनकी दृष्टि में वे लोग तिरस्करणीय हैं, जो अपने लाभ के पीछे सबके सुखों का नाश करते हैं।

2. इस पुस्तक का दूसरा उद्‌देश्य है– गाय आदि पशुओं को जहां तक सामर्थ्य हो बचाया जायं, जिससे दूध, घी और खेती बढ़ने से सबको सुख बढ़ता रहें।

प्रश्न 3 : क्या यह बहुत बड़ा ग्रंथ है ? और किसको लक्ष्य करके लिखा गया है ?

उत्तर : यह बहुत छोटा सा ग्रंथ है। इसको मुख्य रूप से उस समय के ब्रिटिश राज्य की सम्राज्ञी श्रीमती राजराजेश्वरी श्री विक्टोरिया महारानी को दृष्टि में रखकर ही विनय की गई है कि वे पशुओं की हिंसा न होने दें।

प्रश्न 4 : पुस्तक का विषय किस भाषा में है ?

उत्तर : हिन्दी भाषा में ही पुस्तक का विषय प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 5 : विषय को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है ?

उत्तर : इसमें पशुओं से मिलने वाले दूध एवं उनकी सन्तानों से होने वाले लाभों का औसत रूप से मूल्यांकन व गणना की गई है कि एक पशु अपने जीवन में कितने मनुष्यों के लिए हितकारी है। मुख्य रूप से गौ से मिलने वाले दूध से कितने लोगो का पालन–पोषण होता है, तथा उसकी सन्तान बैल से कृषि आदि में कितना लाभ होता है, सबका विस्तृत वर्णन है।

प्रश्न 6 : वृद्ध होने पर गाय अनुपयोगी हो जाती है, दूध नहीं देती व भार रूप हो जाती है। तब इनकी रक्षा की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर : महर्षि ने बड़े मार्मिक शब्दों में ऐसे गौ आदि की तुलना वृद्ध माता पिता के साथ करते हुए उन्हें भी संरक्ष्य माना है। जीवन में प्रदान किये गये दुग्ध आदि लाभों के कारण वे अहिंस्य हैं, ऐसा कहा है।

प्रश्न 7 : पुस्तक में कितने अध्याय हैं ?

उत्तर : यह पुस्तक निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त है, जिन्हें प्रकरण नाम दिया गया है – 1) समीक्षा प्रकरण, 2) नियम प्रकरण, और 3) उपनियम प्रकरण। मुख्य विषय समीक्षा प्रकरण में है।

प्रश्न 8 : नियम प्रकरण आदि से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : महर्षि ने समीक्षा प्रकरण के प्रारंभ में गोकृष्यादि रक्षिणी सभा नामक सभा के निर्माण का उल्लेख किया है। इसका उद्देश्य गौ आदि पशुओं और कृषि आदि कर्मों की रक्षा करना था। इस सभा के जो अधिकारी व सदस्य बनना चाहते थे, उनके लिए अगले दो प्रकरणों में नियमों व उपनियमों का उल्लेख किया है।

अद्वैतमत खण्डन

प्रश्न 1 : क्या महर्षि दयानन्द ने अद्वैत मत अथवा नवीन वेदान्त के विरोध मे कोई ग्रंथ लिखा था ?

उत्तर : हॉं, अद्वैतमत खण्डन नामक छोटी सी पुस्तक लिखी थी।

प्रश्न 2 : यह पुस्तक किस भाषा में लिखी गई थी ?

उत्तर : यह संस्कृत भाषा में हिन्दी भाषा के अनुवाद सहित लिखी गई थी।

प्रश्न 3 : इसका प्रकाशन और मुद्रण स्वामीजी ने कब और कहॉं से करवाया था ?

उत्तर : अद्वैतमत – खण्डन नामक इस पुस्तक का प्रकाशन वि. संवत् 1927 में जब स्वामी जी तीसरी बार काशी पधारे थे, तब हुआ था। यह ट्रेक्ट कविवचन सुधा नामक हिन्दी के मासिक पत्र में भी छपवाया गया था, जो लाइट प्रेस बनारस में गोपीनाथ पाठक के प्रबन्ध से प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न 4 : क्या यह पुस्तक प्रभावशाली रही। जैसा कि श्री पं. लेखरामजी द्वारा संग्रहित महर्षि के जीवनचरित के पृष्ठ 816 पर लिखा गया है – यह ट्रैक्ट नवीन वेदान्त के दुर्ग को तोड़ने के लिए सैनिक बल से अधिक बलवान है। यह दूसरी बार प्रकाशित नहीं हुआ। इसी प्रकार श्री पं. देवेन्द्रनाथ द्वारा लिखित जीवन चरित भाग 1, पृष्ठ 51, में उल्लेख मिलता है, इस बार दयानन्द ने इसी दुर्ग नवीन वेदान्त पर गोला बरसाया और उसके खण्डन में अद्वैतमत खण्डन नामक पुस्तक लिखकर प्रकाशित की।

प्रश्न 5 : क्या यह पुस्तक अभी उपलब्ध है ?

उत्तर : नहीं, अभी यह पुस्तक उपलब्ध नहीं है।

प्रश्न 6 : वैसे तो महर्षि पहले स्वयं भी अद्वैतवादी थे ?

उत्तर : हॉ, अपने जीवन के बहुत लम्बे समय तक महर्षि अद्वैतवादी रहे अर्थात् जीव और ब्रह्म की एकता मानते रहे। परन्तु बाद में अनुभव के आधार पर वे जीव और ब्रह्म का वास्तविक भेद मानने लग गये थे। उनके जीवन चरित्र में उल्लिखित घटनाओं से विदित होता है कि संवत् 1924 के पूर्वार्द्ध से पूर्व ही महर्षि अद्वैतवाद विषयक विचार बदल चुके थे।

प्रिय पाठकगण,

वैदिक सिद्धान्तों के ऊपर आचार्य ज्ञानेश्वर जी, रोजड द्वारा कुछ प्रश्नों के उत्तर संकलित किए गए हैं, उन्हें यहां प्रकाशित किया जा रहा है। आप भी पढ़े और अपने बच्चों को भी पढ़ावें।

प्रकृति

प्रश्न 1 : प्रकृति किसे कहते हैं ?

उत्तर : सत्व गुण, रजो गुण, तथा तमो गुण, इन तीन तत्वों के सामूहिक नाम को प्रकृति कहते हैं।

प्रश्न 2 : प्रक ति की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर : जगत की रचना करने के लिए कारण के रूप में इसकी आवश्यकता होती है। जैसे घड़ा बनाने के लिए मिट्टी की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 3 : क्या प्रकृति की उत्पत्ति और विनाश कभी होता है ?

उत्तर : प्रकृति की उत्पत्ति और विनाश कभी नहीं होता।

प्रश्न 4 : सत्व गुण, रजो गुण, तमो गुण के स्वरूप को बतलाएं ?

उत्तर : सत्व गुण आकर्षण तथा प्रकाश रजो गुण चंचलता तथा दुःख तमो को उत्पन्न करता है तथा तमो गुण मूढता (मोह) तथा स्थिरता को उत्पन्न करता है।

प्रश्न 5 : क्या प्रकृति में जीवात्माओं को उत्पन्न करने का सामर्थ्य है ?

उत्तर : प्रक ति में जीवात्माओं को उत्पन्न करने का सामर्थ्य नहीं है।

प्रश्न 6 : क्या प्रकृति से जीवों के समस्त दुःख दूर हो सकते हैं ?

उत्तर : प्रक ति से जीवों के समस्त दुःख दूर नहीं हो सकते हैं।

प्रश्न 7 : संसार में दुःख कितने प्रकार का है ?

उत्तर : संसार में दुःख तीन प्रकार का है – 1. आध्यात्मिक, 2– आधिभौतिक, 3– आधिदैविक।

– ज्ञानेश्वरार्यः

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के संबंध में प्रमुख व्यक्तियों, विचारकों की सम्मतियां

स्व. इन्दिरा गांधी : पूर्व प्रधानमन्त्री, नई दिल्ली

हमारे देश ने बहुत से महान पुरूषों और सुधारकों को जन्म दिया, इनमें महर्षि दयानन्द हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज में फैले अन्धविश्वास को और विशेष रूप से ऊँच नींच के भेदभाव को मिटाने में लगाया। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने यह उपदेश दिया कि प्राचीन ग्रंथों का फिर से अध्ययन किया जाये, उसी प्रकार यह आवश्यक है कि हम उनके उपदेशों को भी फिर से सही सन्दर्भ में रखकर देखें। समाज में समानता और सामंजस्य लाने का काम कभी समाप्त नहीं होता। इसलिए सभी अच्छे भारतीय नागरिकों को इस काम में जुट जाना चाहिए।

स्व. जगजीवनराम : पूर्व कृषि तथा सिंचाई मन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज का समाज सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों, आदर्शों और उपदेशों का प्रचार आर्य समाज करता रहता है, इससे जनता में समानता पर आधारित जाति–पांति विहीन समाजवादी समाज के निर्माण की भावना उद्बोधित होने में सहायता मिलती है।

स्व. महात्मा आनन्द स्वामीजी का सन्देश

आर्य जगत में एक नया मोड़ लाने की आवश्यकता है। पिछले एक सौ वर्षों में भवन निर्माण का कार्य थोड़ा बहुत हो गया है, परन्तु चरित्र निर्माण व वेद प्रचार का कार्य कुछ ढीला पड़ गया है। जिस विचार के प्रचार करने वाले नहीं होते वह विचार फैलते नहीं हैं। यह एक स्वाभाविक नियम है। अतः स्वाध्यायशील जिनके शरीर में शक्ति है और महर्षि के मिशन को पूरा करने की अभिलाषा है, वे अब कार्यक्षेत्र में वानप्रस्थ या सन्यासी के रूप में निकल पड़े।

स्थान–स्थान पर अष्टांग योग केन्द्र स्थापित करके आत्म दर्शन के पिपासुओं की शुभकामना पूरी की जाये। आज योग के नाम पर दुकानदारी बहुत चल पड़ी है। जिससे योग बदनाम हो रहा है। दुकानदारी को बन्द करने और साधक और साधिकाओं को प्रसन्न करने के लिए यह पग उठाने आवश्यक हैं।

बाल–विद्या मन्दिर स्थान–स्थान पर खुल जाने चाहिएँ। एक और अत्यन्त आवश्यक कार्य यह होना चाहिये कि आज की नई पीढ़ी आर्य समाज के महान कार्यों को नहीं जानती। आर्य समाज ने जो महान कार्य किये हैं उनका उल्लेख एक पुस्तक में होना चाहिए।

बुद्धप्रिय मौर्य : पूर्व उद्योग राज्य मन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश में व्याप्त धार्मिक अन्धविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों को दूर करके भारत के जनजागरण में नई क्रान्ति को जन्म दिया और हजारों कार्यकर्ता पैदा किये जिन्होंने संघर्ष कर देश की आजादी में महत्वपूर्ण भमिका अदा की है।

शिक्षा तथा समाज सुधार क्षेत्र में खास कर देश से जाति भेदभाव मिटाने, अछूतोद्धार और नारी जागरण की दिशा में जो कदम आर्य समाज ने उठाये वे सराहनीय हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आर्य समाज एक बार फिर समाज में अस्पृश्यता तथा जातिवाद जैसी बुराइयों को जड़ से उखाड़ने और देशवासियों में राष्ट्रीय एकता के संचार के लिये जागृति का महामन्त्र देता रहेगा। आर्य समाज के विगत के गौरव की महिमा बनी रहे, इस सफलता की कामना के साथ।

डी. पी. यादव : पूर्व उपमन्त्री, शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार

आर्य समाज की शिक्षा के क्षेत्र में स्वतः देन रही है और इसलिए ऐसे कार्यों में श्रद्धा होना स्वाभाविक ही है। मैं इस प्रकाशन की लोकप्रियता का आकांक्षी हूं।

श्रीयुत वी. जे. पटेल : पूर्व प्रधान असेम्बली

बहुत से महानुभाव स्वामी दयानन्द को सामाजिक और धार्मिक सुधारक कहते हैं, परन्तु मेरी दृष्टि में तो दयानन्द एक सच्चा राजनैतिक नेता था, क्योंकि ऋषि दयानन्द ही पहला व्यक्ति था जिसने यह कहा कि दूसरों का उत्तम शासन भी अपने शासन के समान नहीं हो सकता। 40 वर्ष से जो पुरोगम इण्डियन नेशनल कॉग्रेस का है, वह सब पुरोगम वही हैं जो ऋषि दयानन्द ने आज से पचास वर्ष पूर्व हम सबके समक्ष रख दिया था। सारे भारत की एक भाषा, खद्दर, स्वदेशी का प्रचार, पंचायतों की स्थापना, अछूतों का उद्धार, सारांश यह है कि वर्तमान कांग्रेस का प्रत्येक कार्यक्रम भगवान दयानन्द का ही बतलाया हुआ है। सचमुच हम भाग्यहीन थे, जिन्होंने पचास वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द के पुरोगम को समझकर उस पर आचरण नहीं किया। यदि हम ऋषि दयानन्द के बताये गुरोगम पर आचरण करते तो आज भारतवर्ष स्वतन्त्र हो जाता है। मैं ऋषि दयानन्द को अपना राजनैतिक नेता मानता हूं और मेरी दृष्टि में दयानन्द सचमुच एक राजनैतिक क्रान्तिकारी था।

महात्मा टी. एल. वास्वानी

स्वामी दयानन्दजी के लिए मेरे हृदय में प्रेम और आदर है। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि स्वामी दयानन्द ने हिन्दूधर्म को संकुचित कर दिया है, प्रत्युत मेरा विश्वास है कि उन्होंने हिन्दूधर्म को विस्तृत किया है। स्वामीजी ने न केवल छूतछात के कलंक को दूर करने का प्रचार किया। आपने स्वदेशी, जातीय शिक्षा, राष्ट्रीय भाषा आदि की वकालत की और अपने कट्टरपन को तोड़ दिया। आपने नाईयों और अन्य प्रसिद्ध अन्त्यज जातियों को धार्मिक अधिकार भी दिये थे। मेरा विश्वास है कि स्वामीजी भारत की आर्य सभ्यता और शिष्टता के वर्तमान युग के सर्वश्रेष्ठ साक्षी थे। वस्तुतः मैं उन्हें एक सुधारक ही नहीं समझता, प्रत्युत एक ऋषि समझता हूँ। वस्तुतः मैं उन्हें एक सुधारक कहा जाता है। मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द के जीवन और विद्या के सन्देश लूथर की अपेक्षा महान थे। मैं स्वामी दयानन्द को वर्तमान भारत के ऋषियों, मुनियों, विद्वानों, पण्डितों और शहीदों में सबसे बढ़कर मानता हूँ।

क्रमशः.................

मनमीत बसा मन में

मनमीत बसा मन में, मन के दर्पण को देखा नहीं,
कभी निराकार माना, कभी अवतार माना, उलझे यूं उलझन में।
मनमीत बसा मन में.................

बिटिया की शादी, कभी बेटे का गौना,
यूं देखते हैं ये सपना सलौना,
सोना कभी, कभी चॉदी मिले, नौकर कभी बॉधी मिले
रहना ओ महलन में।
मनमीत बसा मन में..................

मक्का मदीना के चक्कर लगाए
मथुरा में मोहन के भी गीत गाए।
कभी अमरनाथ पहुंचे, कभी जगन्नाथ पहुंचे
भटके यूं जीवन में।
मनमीत बसा मन में.....................

रसना ने रस कभी विषयों का पीकर
दृष्टि, कुदृष्टि भी डाली किसी पर
समय यूं गंवाते रहे, यूं ही दिन जाते रहे,
बहरूपिये पन में।
मनमीत बसा मन में.................

दिल के ही दलदल में दिलदार तेरा,
मन के ही दर्पण में है यार तेरा
स्वरों की झंकारों में है, सांखी के तारों में है,
'बैमेल' गायन में
मनमीन बसा मन में...............

संकलनकर्ता **कु. सुव्रता आर्या**
मानमन्दिर गोरमी जि. भिण्ड

बुराई का प्रतीक मनोरंजन का साधन बना

सारे जमाने ने एक बार फिर पुतला जलाया,
रावण बनाने में तन, मन, धन लगाया।

पहले रावण इतना महंगा नहीं बनता था,
साधारण वेश–भूषा में ही वह जलता था।

पर समय के साथ त्यौहार भी बदलते जा रहे हैं,
बुराई के प्रतीक में भी मनोरंजन ला रहे हैं।

ऊँच–नीच, भले बुरे का भेद ऐसे ही मिटेगा,
देख लेना अगली सदी तक रावण ही फैशन में दिखेगा।

इसलिए रावण का कद हर दशहरे पर बढ़ता जा रहा,
बुराई का प्रतिक गगन चुंभी तरक्की पा रहा।

राम वर्षों से पुरानी वेश–भूषा और कद में ही दिखते हैं,
आज की पीढ़ी इस भेद को देख कर यही सीखते हैं।

जमाना बुराई को तरक्की दिलाता है,
राम 6 और रावण साठ फुट का बनाता है।

इसलिए जय भले ही राम की बोले पर हीरो तो रावण है,
नवयुवक के भटकाव का सबसे बड़ा ये कारण है।

जो जैसा था वैसा हमने मानना छोड़ दिया,
बुराई के प्रतीक को भी मनोरंजन से जोड़ दिया।

इसलिए रावण बुराई के प्रतीक रूप में नहीं जलता है,
मनोरंजन का साधन बना ये मेरे मन को खलता है।

प्रदर्शन ने दर्शन को लुप्त कर बदल दी दिशा,
दिन के प्रकाश को ज्यूं मिटा दे आकर निशा।

आगे आने वाली पीढ़ी सबकुछ उलटा समझेगी,
अच्छाई और बुराई के भेद को ही तोड़गी।

इसलिए उद्देश्य समझकर पर्वों को मनाना जरूरी है,
वर्ना पर्वों की सार्थकता ही अधूरी है।

– प्रकाश आर्य, महू

कर्म और कर्मफल

1. किस प्रकार के कर्मों का फल कैसा ? कब ? कहॉ ? किस रूप में मिलता है ? क्या हम इस विषय में जान सकते हैं ?

उत्तर : कर्मों का फल कैसा, कब कहॉ, किस रूप में मिलता है इसके विषय में पूर्ण रूप से मनुष्य नहीं जान सकते, यह कार्य ईश्वर के द्वारा संचालित व नियन्त्रित है। हॉ, कुछ–कुछ बातों को मनुष्य शास्त्रों के आधार पर जान सकता है।

2. क्या अपने कर्मों का फल दूसरे को दे सकते है ? भुगा सकते हैं ? हॉ, तो कैसे ? नहीं, तो क्यों नहीं ?

उत्तर : कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों का फल किसी दूसरे को नहीं दे सकता है। हॉ, अपने कर्मों के परिणामों और प्रभावों से दूसरे को सुख–दुःख पहुंचा सकता है ?

3. कर्मों का कर्ता कौन है ? जीव या मन या इन्द्रियॉ या शरीर या ईश्वर या अन्य कोई ?

उत्तर : कर्मों का कर्ता जीवात्मा ही है मन, इन्द्रियॉ, शरीर आदि तो जड़ है और कर्म करने के उपकरण (साधन) हैं।

जब भगवान बुद्ध हताश हुए

भगवान गौतम बुद्ध जीवन रहस्यों को मालूम करने के लिए बहुत दिनों तक तपस्या और कठोर साधना में लगे रहे। उन्होंने शरीर को भी पर्याप्त कष्ट दिया, खूब चिन्तन किया, पर आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई।

उन्हें कठिनाइयों और परेशानियों ने विक्षुब्ध कर दिया। क्या करें ? वे साधना करते–करते जैसे थक गए थे। पर्वत जैसे उंचे आकार वाली परेशानियों से त्रस्त होकर वे हताश हो गये, या यों कहिये कि वे कर्तव्य छोड़कर धड़ाम से गिरे.

सोचने लगे अब मैं और अधिक कठिनाईयॉ सहन नहीं कर सकूंगा। मैं मानवता के, सुख और समृद्धि के, अपने उच्च लक्ष्य को छोड़ता हूं। ये कायरता के शब्द उनके मन में लगातार घूम रहे थे। उन्होंने अपनी तपस्या मध्य में ही छोड़कर घर लौटने का निश्चय कर लिया।

वे मन ही मन कह रहे थे, मैं व्यर्थ ही इतनी परेशानियों में पड़ा रहा। मैंने जीवन के रहस्यों को मालूम करने में बहुत सा समय नष्ट कर दिया, पर हाय ! कुछ हाथ नहीं आया। इतना समय, परेशानी, शारीरिक और मानसिक कष्ट सब कार्य व्यर्थ हो गया। अब सब मुसीबतें छोड़ता हूं।

निराशा, अन्धविश्वास और पराजय की कायर भावनाओं ने उन्हें क्षुब्ध कर दिया और वे लौट पड़े वापस घर के लिए।

लड़खड़ाते कदमों से वे वापस आ रहे थे कि मार्ग उन्हें प्यास लगी। जल पीने के लिए वे एक झील के किनारे गये, जल पिया, विश्राम किया, मन में कुछ ठण्डा हुआ। सामने एक दृश्य देखा –

एक नन्हीं सी गिलहरी झील के जल में अपनी पूंछ भिगो–भिगोकर पानी बाहर छिढ़क रही है। एक बार, दो बार, दस बार, बीस बार, सैकड़ों बार यही काम कर रही है। वह जल में पूंछ भिगोती, सूखी धरती पर आती और पानी बाहर झाड़ आती है।

उन्हें उससे बातें करने की बड़ी उत्सुकता हुई। प्यारी गिलहरी तुम क्या कर रही हो ?

वह दृढ़ता भरे स्वर मे बोली – इस झील के पानी ने मेरे बच्चों को बहाकर मार डाला है। उससे बदला ले रही हूं। झील को इस प्रकार सुखाकर ही छोड़ूंगी।

उसने अपना काम पूर्ववत् शुरू कर दिया।

बुद्ध बोले – झील को सुखा रही हो ? बिना किसी बर्तन के पानी बाहर फेंक

रही हो ? तुम्हारी छोटी सी पूंछ से भला कितनी बूंदे सूख पाती होगी। तुम्हारे इतने छोटे शरीर, थोड़े से बल और सीमित साधनों से भला कैसे यह विशाल झील सूख सकेगी ? इसमें न जाने कितने युग का समय लग जाएगा, तुम्हारी आयु ही कितनी है ? इतना बड़ा काम और इतने सीमित साधन ! यह सब व्यर्थ होगा ! व्यर्थ क्यों अपनी शक्ति का अपव्यय कर रही हो ? तुम इस झील को कभी खाली न कर सकोगी।

यह झील कब खाली होगी या नहीं होगी, यह मैं नहीं जानती, न इसकी कोई परवाह ही करती हूं। मैं दृढ़तापूर्वक अपने काम में निरन्तर लगी रहूंगी। श्रम करना, लगातार अपनी लक्ष्यपूर्ति में लगे रहना, कठिनाइयों का सामना करना और अन्त में विजय प्राप्त करना मेरी योजना है।

भगवान बुद्ध के मन में फिर उथल पुथल हुई।

वे सोचने लगे – जब यह नन्हीं सी गिलहरी अपने थोडे से साधनों से इतना बड़ा कार्य करने के स्वप्न देखती है, तब भला मैं उच्च मस्तिष्क और सुदृढ़ शरीर वाला विकसित मनुष्य अपने लक्ष्य की पूर्ति क्यों न कर सकूंगा।

वे फिर वापस अपनी साधना के लिए लौट गये। उन्होंने फिर जंगलों का कठिन जीवन बिताने और घोरतम तपस्या करने का निश्चय किया।

एक दिन वे अपने लक्ष्य में सफल होकर ही रहे।

प्रेषक– **श्री सत्यानन्द आर्य**

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में श्रीकृष्ण

देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृष्य है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।

इस प्रकार ऋषि दयानन्द और आर्य समाज श्री कृष्ण को अपना आदर्श मानता है। इनके गुणों को जीवन में धारण करना ही इनकी सच्ची पूजा करना है।

कर्मयोग के उपदेष्टा श्रीकृष्ण

युद्ध के मैदान में जब अर्जुन किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया था और युद्ध न करके भिक्षाटन करके जीवन यापन करने की रट लगाने लगा तब श्रीकृष्ण ने उसे कर्म करने की प्रेरणा दी, क्षात्र धर्म का उपदेश देते हुए कहा कि मनुष्य को (स्वधर्म या कर्तव्य की भावना) से कर्म करने में लगा रहना चाहिए (कर्मव्येवाधि.......) कर्म से विमुख मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा दी।

आखिर क्यों ?

आखिर क्यों हमारे ऋषि मुनियों ने तपस्या कर अपनी आन्तरिक शक्तियों के साथ ही मानव मात्र के लिये जीवन सुखी बनाने हेतु कुछ इन लाभकारी सिद्धान्तों को समाज की परम्पराओं एवं मान्यताओं के रूप में प्रस्तुत किये।

परन्तु मध्य युग में कुछ स्वार्थी लोगों ने भोले भाले लोगों को अन्धविश्वास के अन्धेरे गर्त में धकेल दिया। यहां तक कि मानव बलि भी एक धार्मिक अनुष्ठान मानी जाने लगी।

इन परम्पराओं में धर्म, श्रद्धा, भय आदि भावनाओं का समावेश रहता था जिससे प्रेरित होकर सभी जन इन परम्पराओं का श्रद्धा से पालन करते आये हैं परन्तु आज का युग विज्ञान का युग है प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर कसा जाता है सही जानकारी या उत्तर न मिलने के कारण इन जनोपयोगी मान्यताओं की मान्यता लगभग समाप्त सी हो गई है इन्हें मात्र ढकोसला समझा जाने लगा है।

यहां मैं कुछ महत्वपूर्ण परम्पराओं को वैज्ञानिक आधार पर प्रस्तुत कर रही हूं, ताकि इन कल्याणकारी परम्पराओं की अनुपालना का लाभ उठा सकें, हमारी पीढ़ी भी जुड़ी रहे तथा भारतीय संस्कृति का अस्तित्व भी बना रहे।

आखिर क्यों ? करते हैं लोग पीपल के पेड़ की पूजा ?

हिन्दुओं की धार्मिक आस्था के अनुसार सभी भगवान (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) पीपल के वृक्ष में निवास करते हैं इसीलिए प्रतिदिन इस पर जल चढ़ा कर तथा कम से कम सात परिक्रमा कर इस दिव्य वृक्ष की पूजा करनी चाहिए। (पौराणिक मान्यता) परन्तु वास्तविकता यह है कि पीपल का पेड़ एक मात्र ऐसा पेड़ है जिसमें से हर समय प्राणवायु (ऑक्सीजन) निकलती रहती है। इसीलिए जितना अधिक सम्पर्क हमारा इस वृक्ष से होगा उतनी अधिक ऑक्सीजन हमें प्राप्त होगी और उतनी ही अधिक हमारी आयु बढ़ेगी। क्योंकि हम स्वस्थ और निरोगी रहेगें, और फेंफड़े और ह्रदय अपना कार्य सफलतापूर्वक कर सकेगें। पीपल का वृक्ष कॉर्बन डाईआक्साईड अपने अन्दर खींचता है जो एक विषैली गैस है इससे वातावरण शुद्ध होता है। इसकी हवा सर्दी में उष्णता तथा गर्मी में शीतलता प्रदान करती है। जब ठण्डी हवा के कृत्रिम साधन नहीं थे तो लोग दोपहर को पीपल की छांव में नींद लेते थे।

पीपल के पेड के पत्तों के स्पर्श से वायु में मिले, संक्रामक वायरस नष्ट हो जाते हैं। आयुर्वेद विद्या के अनुसार इसकी छाल, पत्तों, फल व बड़ से कई रोग निवारक दवाईयां बनाई जाती है। इतने गुणों से भरपूर पीपल के वृक्ष क्यों न

पूजनीय हों तथा भगवान का निवास स्थल हों। पीपल सुरक्षित रहे इसलिए ऐसी एक मान्यता प्रचलित की गई थी कि पीपल के पेड का उखड़ना कुल का विनाश करना है इसका मुख्य उद्देश्य था कि अधिक से अधिक पेड घरों में बने रहें। पेड होगें तो प्राण रक्षक वायु मिलेगी, प्राण सही होगें तो रोग नहीं होगें, रोग नहीं होगें तो मनुष्य शतायु होगा जो मनुष्य की सही आयु मानी जाती है, यही कारण था पीपल के प्रति लोगों के लगाव का, जिसे कालान्तर में मूल उद्देश्य से भटक कर केवल पौराणिकों ने पूजा में बदल दिया।

स्नान किये बिना भोजन खाना क्यों उचित नहीं ?

शास्त्रों का कहना है – **"अस्नानी समलं भुंक्ते"** बिना स्नान किये भोजन करना गन्दगी खाने के समान होता है।

स्नान करने से मनुष्य के रोम कूपों का सिंचन हो जाता है। शरीर से निकले पसीने से जो पानी की कमी हो जाती है स्नान करने से उसकी पूर्ति हो जाती है। शरीर में शीतलता आती है, भूख लगती है। भूख लगी हो तो और बढ़ जाती है। भूख में खाना स्वादिष्ट लगता है जैसे कहा भी है कि "भूख में गाजर भी मीठी लगती है" भूख के कारण शरीर में से कुछ विशेष प्रकार के रस निकलते हैं जो हमारे भोजन में मिलकर भोजन को पुष्टिवर्धक बनाते हैं। भूख में भोजन करें तो शरीर को लाभ होगा।

बिना स्नान किये भोजन करने से हमारी जठराग्नि उसे पचाने में लग जाती है बाद में जब स्नान करते हैं तो पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है, भोजन अच्छी तरह से पच नहीं पाता है जिससे कब्ज व गैस की शिकायत हो जाती है इसलिए बुजुर्गों का कहना है कि बिना स्नान किये भोजन करना धर्म विरूद्ध है, पाप है। इसलिए माँ बाप बिना स्नान किये बच्चों को खाना नहीं देते थे। आखिर क्यों न पहले स्नान करें फिर भोजन करें। जिसमें लाभ ही लाभ हैं।

आखिर क्यों लेते हैं चरणामृत ?

अकसर देवी देवताओं और गुरूओं के चरणों को धोने वाले जल को चरण अमृत माना जाता है जो प्रायः आरती पूजा के पश्चात भक्तों में वितरित किया जाता है। श्रद्धालु जन इसे इतनी श्रद्धा से ग्रहण करते हैं कि इस आचमन से उनकी सभी मनोकामनायें पूर्ण हो जायेगीं। (पौराणिक मान्यता) यह धारणा बिलकुल अवैज्ञानिक व स्वस्थ विज्ञान के प्रतिकूल है। स्वामी दयानन्दजी ने ऐसे अन्धविश्वासों का घोर विरोध किया था। वास्तव में चरणामृत क्या है और हम सबको प्रतिदिन चरणामृत क्यों पीना चाहिये ? चरणामृत में अटूट श्रद्धा के कारण ईश्वर पापों का नाश तो करता ही है उसके साथ शरीर की सभी बीमारियों का नाश भी करता है। रोगों के

कीटाणुओं को मारने की अदभुत क्षमता होती है। चरणामृत जिसे पंचगव्य भी कहते हैं। यह दूध, दही, घी, शहद और तुलसी को मिलाकर तैयार किया जाता है। इसमें दही और तुलसी को विशेष महत्व दिया जाता है। तुलसी एक दिव्य औषधि का वृक्ष है। तुलसी की पत्तियों में संक्रामक रोगों को रोकने की अद्‌भुत शक्ति होती है। इसके सेवन से सर्दी जुकाम, खांसी, मलेरिया आदि तुरन्त ठीक हो जाते हैं। केंसर जैसे भयानक रोगों को ठीक करने में भी सहायक होती है। ग्रहण के समय खाद्य पदार्थ में इसे डालने की हमारे बुजुर्गों द्वारा सलाह दी जाती है। क्योंकि तुलसी में विद्युत शक्ति एवं प्राण शक्ति सबसे अधिक होती है। तुलसी के प्रभाव से भोज्य पदार्थ प्रदूषण से मुक्त रहते हैं। इसलिये प्राचीन काल में तुलसी का पौधा हर हिन्दू के घर होता था। दूसरा पदार्थ होता है दही इसमें कीटाणुओं से लड़ने की अद्‌भुत शक्ति होती है, दूध और घी में शक्ति होती है और जल शरीर को शीतलता एवं ऊर्जा प्रदान करता है। यह चरणामृत स्मरण शक्ति और बुद्धि के विकास के लिए महाऔषधि है, क्योंकि इसे तांबे के बर्तन में रखने का विधान है। तांबे के सूक्ष्म कण भी इसमें मिल जाते हैं जिनमें रोगों की मारक क्षमता होती है। यह था वास्तव में चरणामृत जो यज्ञ आदि के बाद श्रद्धालुओं में वितरित किया जाता था न कि किसी के चरणों के प्रक्षालन के बाद का जल। कितना उपकार है हमारे ऋषियों का हम पर। ऐसी लाभदायक वस्तु को आखिर क्यों न हम प्रतिदिन प्रयोग में लाएं।

– **अरूणा सतीजा**, जयपुर

परिभाषा सहित पॉच महायज्ञों का वर्णन

1. **ब्रह्मयज्ञ** : नित्य प्रातः, सायं ईश्वर का ध्यान करना वेदों का स्वाध्याय करना।
2. **देव यज्ञ** : अग्निहोत्र (हवन करना)
3. **पितृयज्ञ** : माता–पिता, सास ससुर आदि की सेवा सुश्रुषा करना।
4. **बलिवैश्यदेवयज्ञ** : पशु–पक्षी, अनाथ, विकलांग, रोगी आदि जीवों को अन्न आदि प्रदान करना।
5. **अतिथि यज्ञ** : घर में पधारे, सन्यासी, विद्वान, उपदेशक आदि की सेवा सत्कार करना उनसे उपदेश ग्रहण करना।

प्रेरक प्रसंग –

उदारता

एक सेठ के पास बहुत धन दौलत थी। वे अवसर आने पर लाखों खर्च कर देते पर वैसे एक पैसा भी फालतू खर्च नहीं करते थे। उनके पुत्र की शादी हुई, पुत्रवधू आई। दूसरे–तीसरे दिन की घटना होगी, सेठजी के हाथ से कुछ तेल जमीन पर गिर गया। तुरन्त ही सेठजी तेल लेकर अपने चमड़े के जूतों पर चुपड़ने लगे। नववधू ने जब यह दृश्य ऑखों से देखा तो वह सोचने लगी। ओ हो ! मेरे ससुर इतने कंजूस हैं तो मुझे इस घर में रहने में कितनी तकलीफ उठानी होगी। मुझे इस बात की परीक्षा करनी चाहिए।

दूसरे दिन पुत्रवधू बीमारी का बहाना कर सोती रही। सास के पूछने पर उसने कहा मेरे सिर में भयंकर दर्द हो रहा है। बहू की अस्वस्तता की जानकारी मिलते ही सेठजी आए और बोले बेटी चिन्ता मत करना, अभी डॉक्टर बुलवाता हूं।

बहू ने कहा – पिताजी डॉक्टर की दवाई से यह दर्द कम न होगा।

तो फिर कोई दूसरा इलाज........। सेठ ने पूछा।

हॉ पिंताजी इलाज तो जानती हूं लेकिन .... बहू ने कहा।

बेटी तू घबरा क्यों रही है ? सांफ कह दे। सेठ ने वात्सल्यपूर्वक पूछा।

वह बोली पिताजी। जब–जब मेरे पीहर में ऐसी पीड़ा होती थी तब–तब वहॉ मेरे पिताजी सच्चे मोती पीसकर उसका लेप लगाते, जिससे मेरी पीड़ा दूर हो जाती थी।

ओ हो ! बस यही बात है न। मैं अभी मोती निकालता हूॅ। सेठ ने कहा।

पर जब सेठजी मोती निकाल कर पीसने की तैयार करने लगे तो बहू एकदम खड़ी होकर कहने लगी, पिताजी रहने दीजिए, मेरा सिर दर्द दूर हो गया।

वह कैसे ? सेठ ने पूछा।

पिताजी ! वास्तव में मुझे सिरदर्द था ही नहीं। मैंने आपकी उदारता की परीक्षा ली है। जब मैंने आपको भूमि पर गिरे हुए तेल को जूते पर लगाते हुए देखा तब मेरे दिमाग में यह शंका पैदा हो गई कि मेरे ससुर इतने कृपण हैं, तो मैं यहां कैसे रह सकूंगी ? किन्तु पिताजी ! अब मेरी यह शंका दूर हो गई है।

सेठ ने कहा – कृपणता दोष है, किन्तु वस्तु का पूर्ण सदुपयोग करना दोष नहीं है। धन का अनावश्यक व्यय न करना भी गुण है तो अवसर आने पर जरूरत की जगह लाख रूपए खर्च कर देना भी गुण ही है। सेठ के इन वचनों को सुनकर पुत्रवधू लज्जित हुई व सेठजी से माफी मॉगी।

आर्य समाज महावीर नगर, भोपाल

आर्य समाज महावीर नगर, भोपाल के संबंध में अन्तरंग सभा के लिए निर्णय के अनुसार स्थगित (भंग) है। उसके स्थान पर तदर्थ समिति कार्यरत है। जिसमें श्री अतुल वर्मा (संयोजक), श्री कमलेश याज्ञिक (सदस्य), श्री महेश शर्मा (सदस्य), श्री सुभाष मनचन्दा (सदस्य), श्री चन्द्रहास शुक्ला (सदस्य), श्री जगदीश प्रसाद शर्मा (सदस्य), श्री वेदाशीष आर्य (सदस्य), श्री आर एस चौहान (सदस्य), माता तपेश्वरी जी शर्मा (सदस्या)।

प्रान्तीय सभा के आर्य समाज के नियमों उपनियमों का पालन किए बिना किए गए अवैधानिक निर्वाचन की घोषणा एवं जांच समिति की रिपोर्ट पर आर्य समाज महावीर नगर के कुछ सदस्यों की प्राथमिक सदस्यता निरस्त कर दी गई है। जिसमें श्री कन्हैयालाल कामदार, श्री रजनीश पंवार, श्री राधेश्याम सक्सेना, श्री सन्दीप सोनी आदि हैं।

विजयादशमी पर्व
की हार्दिक शुभकामनाएं
विजय का यह पर्व आप सबके लिए मंगलमय हो।

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी — *सभाप्रधान*

प्रकाश आर्य — *सभामन्त्री*

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

गायत्री महायज्ञ

दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2015

महू शहर में आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन प्रति दो वर्ष में किया जाता है।

इस वर्ष भी यह आयोजन दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2015 तक आयोजित किया गया है। जिसमें भारत के प्रसिद्ध विद्वानों को आमन्त्रित किया जाता है।

इस हेतु डॉ. सत्यपालसिंहजी 'सांसद, पूर्व पुलिस कमीश्नर, डॉ. सुरेन्द्रजी 'कुलपति–गुरूकुल कांगड़ी', श्री वेदप्रतापजी वैदिक 'वरिष्ठ पत्रकार', डॉ. वागिश शर्मा एटा, श्री जगदीश शर्मा 'भास्कर जयपुर', श्री विनय विद्यालंकार एवं भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य एवं यज्ञ हेतु गुरूकुल पाणिनी महाविद्यालय की आचार्य नन्दिता जी शास्त्री एवं मन्त्रपाठ हेतु शिष्याएं पधार रही हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य कई विद्वान, सन्यासी, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी आमन्त्रित किया है।

कार्यक्रम में हजारों की संख्या में सनातनधर्मी एकत्रित होते हैं, सहयोग करते हैं।

राधेश्याम बियाणी
कार्यक्रम प्रभारी

शोक संवेदना

सावेदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा मंत्री प्रकाश आर्य जी की वयोवृद्ध माता श्रीमती जानकी देवी आर्या का निधन दिनांक 24.10.15 को इंदौर (महू) में हो गया। आपकी अंतिम यात्रा में नगर के गणमान्य नागरिक एवं सभा के पदाधिकारीगण शामिल हुए। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं समस्त वैदिक रवि परिवार उनके निधन पर संवेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर से दिवंगत आत्मा की अच्क्षुण अनंत शांति के लिए प्रार्थना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ऋषिभक्त श्री भागीरथजी पाटीदार, मौलाना
का 17/9/2015 को देहावसान हो गया।
प्रान्तीय सभा की ओर से दिवंगतजन को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

गुना संभाग में कार्यशाला सम्पन्न

दिनांक 4/10/2015 को आयोजित गुना संभाग में आयोजित कार्यशाला में गुना संभा की आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह कार्यशाला निरन्तर साढे तीन घण्टे तक चलती रही। उपस्थित 50 से अधिक संख्या सदस्यों की थी, कार्यशाला में आर्य समाज के नियम उपनियम सिद्धान्तों तथा प्रचार प्रसार की विधि पर सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने बहुत सरल एवं प्रभावी ढंग से इन विचारों की प्रस्तुति की। अनेक वृद्ध आर्यजनों ने इस प्रकार के कार्यक्रम को पहलीबार और सार्थक होना बताया। कार्यक्रम में दूरदराज से आये सदस्यों ने अपने विचार भी व्यक्त किए। प्रमुख बातों को नोट किया और शीघ्र ही पुनः इसी प्रकार की कार्यशाला आयोजित करने का सुझाव भी दिया। कार्यशाला का संचालन उप प्रधान श्री रामपाल सोनी ने किया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश गांधी भी उपस्थित थे, उन्होंने प्रारंभ में कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला और उपस्थित जनों का धन्यवाद किया।

श्रीधर शर्मा
उपमन्त्री : गुना संभाग

सिंहस्थ के संबंध में बैठक सम्पन्न

सिंहस्थ के संबंध में आर्य समाज उज्जैन में प्रमुख व्यक्तियों की बैठक 11/10/2015 को सम्पन्न हुई। जिसमें अभी तक की कार्यवाहियों का विवरण संयोजक श्री लक्ष्मीनारायण आर्य, एवं श्री ललित नागर द्वारा किया गया। सिंहस्थ के संबंध में श्री बाबूलाल पण्ड्या ने 1 लाख रू0 दान की घोषणा की अन्य व्यक्तियों ने भी दान की घोषणा की।

सिंहस्थ में सभा की ओर से लगाए जाने वाले कैम्प में अनेक नई बातों को सम्मिलित किया जा रहा है, जिससे इतने बड़े आयोजन से हजारों लोग वैदिक विचारधारा से प्रभावित होगें और यह एक अभूतपूर्व कार्यक्रम होगा। इसकी विस्तृत जानकारी सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य द्वारा प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम में संवरक्षक समिति के सदस्य श्री दलवीरसिंह राघव, श्री राजेन्द्रजी व्यास, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री भगवानदास अग्रवाल सहित संभाग के उपमन्त्री दक्षदेव गौड, मनोज स्वर्णकार, दरबारसिंह आर्य, कैलाशनारायण उपमन्यु, कमलेश याज्ञिक, काशीराम अनल, भगतसिंह आर्य आदि की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

श्री वेदप्रकाश आर्य ने इस अवसर पर अपील की कि आर्यजन अभी से अपना समय कार्यक्रम के लिए देने की घोषणा करें, कौन कितने समय तक कार्यक्रम में समय दे सकता है ताकि उन्हें कार्यभार सौंपा जाए साथ ही अनाज एवं अन्य आर्थिक सहयोग देने की भी अपील की है।

– ललित नागर

आर्य नारायणप्रसाद साहू का निधन हुआ

कुरवाई निसं। जिला सहकारी बैंक के सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक एवं आर्यसमाज के वरिष्ठ पदों पर रहे समाजसेवी नारायणप्रसाद साहू का शुक्रवार को निधन हो गया, वह लगभग 75 वर्ष के थे, वैदिक रीति से उनका अन्तेष्टी संस्कार वेद मंत्रों के व्दारा श्रीराममुनि वानप्रस्थी, पं. विपिनबिहारी चौबे, एवं आर्य समाज के मंत्री विशम्भरदयाल सिंघल के द्वारा करवाया गया। इस मौके पर शांतिधाम में आयोजित हुई शोक सभा में नगर के गणमान्य नागरिकों ने उनकी सात्विक, एवं समाजसेवी जीवनशैली को याद किया गया। उनके निधन पर यहां आर्य समाज कुरवाई, सहित अनेक सामाजिक संगठनों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

वेदप्रचार सप्ताह संपन्न हुआ

कुरवाई जिला विदिशा। वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यहां आर्य समाज कुरवाई के द्वारा विभिन्न परिवारों में देवयज्ञ के आयोजन किए गए, इस मौके पर प्रतिदिन वेद मन्दिर आर्य समाज कुरवाई के परिसर में वैदिक विद्वान आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर यूपी, के प्रवचन एवं भजनोपदेशक भीष्म आर्य के भजनों से जनसमूह लाभान्वित हुआ।

वेद प्रचार जनजागृति महोत्सव आरम्भ हुआ

कुरवाई निसं। आर्य समाज कुरवाई के व्दारा यहां 52 वां वार्षिकउत्सव आयोजित किया गया। आयोजन में आर्य जगत के प्रशिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर यूपी से यहां पहुंचे हैं, वहीं भजनोपदेशक भीशमजी आर्य के उपदेश सांयकाल आर्य समाज मन्दिर में चल रहे हैं, प्रातःकाल पारिवारिक सत्संग्ग के तहत नगर में देव यज्ञ किए जा रहे हैं। जिनमें सम्मिलित होकर अनेक श्रद्धालुजन धर्मलाभ प्राप्त किया।

श्री रघुनाथसिंह आर्य आम्बादेव के द्वारा सभा को सात्विक दान

श्री रघुनाथसिंह आर्य आम्बादेव के द्वारा जिला आगर में मुख्य मार्ग पर स्थिति साढे तीन बीघा भूमि और उस पर संचालित विद्यालय सहित समस्त सामग्री मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रदान करने की घोषणा पूर्व में कर दी गई थी। किन्तु अब उसका विधिवत लेख मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत सम्पदित, भू–सम्पत्ति अधिष्ठाता श्री वेदप्रकाश सेण्डो के द्वारा हो चुका है। इस कार्य में श्री काशीराम अनल, भगतसिंह तथा दरबारसिंह आर्य का विशेष सहयोग रहा। श्री रघुनाथसिंह को सभी आर्यजनों ने इस हेतु धन्यवाद दिया।

धर्म प्रचार –

सभा अन्तर्गत अनेक स्थानों पर धर्म प्रचार

पश्चिम निमाड दिनांक 7 अक्टू से 14 तक सभा प्रचारक श्री सुरेश शास्त्री, श्री कमलकिशोर शास्त्री एवं सहयोगी संजय आर्य द्वारा ग्राम कवड़िया, कुआ, नान्दरा, केरवा, बगड़ी, सुन्द्रेल, मोगांवा आदि स्थानों पर वाहन के साथ वेद प्रचार किया गया। विजयादशमी के पश्चात पुनः 6 गांवों में प्रचार का कार्यक्रम निर्धारित हुआ है।

सुश्री प्रियंका आर्य, भुसावर राजस्थान द्वारा प्रचार

भजनोपदेशिका सुश्री प्रियंका आर्य द्वारा आर्य समाज राऊ, महू एवं आर्य समाज दयानन्दगंज इन्दौर में संगीतमयी प्रस्तुति की गई। श्रोताओं ने कार्यक्रम को बहुत सराहा तथा आगामी 3 दिवसीय कार्यक्रम धार क्षेत्र में रखने का निश्चय किया।

ग्वालियर – सभा प्रचारक श्री सुरेश शास्त्री द्वारा ग्वालियर गोसपुरा में 3 दिवसीय प्रवचन का कार्य किया गया।

मुरैना संभाग में 25, 26, 27 अक्टूबर 2015 को सभा प्रचारक श्री सुरेश शास्त्री का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है।

रतलाम संभाग में प्रचार

आर्य समाज सैलाना में 27 से 30.तक वार्षिकोत्सव मनाया गया, जिसमें यज्ञ भजन प्रवचन प्रतिदिन किए गए। इस कार्यक्रम में स्वामी श्रद्धानन्दजी, हरियाणा, सुश्री अंजलि आर्या हरियाणा कार्यक्रम में उपस्थित हुए थे। बड़ी मात्रा में उपस्थिति रही। पत्रकार वार्ता की गई। अनेक लोगों ने नित्य हवन करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में धामनोद, रतलाम, जावरा, बड़नगर, मौलाना से भी आर्य जन उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन श्री शेखर अवस्थी ने किया।

प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी एवं राजनीतिज्ञ नवजोतसिंह सिद्धू ने करवाया हवन यज्ञ

प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी एवं राजनीतिज्ञ नवजोतसिंह सिद्धू ने करवाया हवन यज्ञ करवाया गया।

स्मरण रहे कि गुरू गोविन्दसिंह ने खालसा की स्थापना करते समय यज्ञ करने के पश्चात ही पंच प्यारों का आवाह्न किया था।

सिख पंथ में यज्ञ (होम) का वैसा ही महत्व स्वीकार किया गया है जैसा कि हिन्दू धर्म के अन्य वर्ग सम्प्रदायों में प्रचलित है। गुरूवाणी में यज्ञ–महिमा का उल्लेख अनेकों स्थानों पर मिलता है।

हिमाचल प्रदेश के नवनियुक्त राज्यपाल

प्रसिद्ध आर्य विद्वान व गुरूकुल कुरूक्षेत्र के यशस्वी संचालक

आचार्य श्री देवव्रतजी

को

हार्दिक बधाई

राज्यपाल के पद पर आचार्य देवव्रत जी का पदस्थ होना समस्त राष्ट और आर्य जगत के लिए सम्मानजनक सन्देश है।

ऐसे विद्वान योग्य और धार्मिक व्यक्ति का राजनीति के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर आसीन होना देश के लिए एक शुभ संकेत है। इस हेतु वर्तमान सरकार भी बधाई की पात्र है।

शुभेच्छु :

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल (म. प्र.)

प्रिय पाठकगण,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना - पढ़ाना और सुनना - सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ।।
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू

AMIT # 98262-71062